इतिहास-संस्कृति रक्षा एवं हिंदू राष्ट्रकी स्थापना

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : आंग्ल शिक्षाव्यवस्था एवं इतिहासका विकृतिकरण

१. आंग्ल शिक्षणव्यवस्था ! – प्रा. रामेश्वर मिश्र, वाराणसी ९
२. इतिहासके विकृतिकरणकी समस्या ! – पू. युश महाराज, उत्तरप्रदेश १०
३. इतिहासके विकृतिकरणका विवेचन – प्रा. रामेश्वर मिश्र, वाराणसी १५
४. इतिहासका विकृतिकरण रोकें ! – श्री. दुर्गेश परूळकर, हिंदू महासभा २४

अध्याय २ : संस्कृतिरक्षा

१. आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर संजोएं ! – पू. नारायण साई, देहली २५
२. पश्चिमी 'डे' और 'पब' विकृति' रोकना संस्कृतिरक्षा है !
– श्री. प्रमोद मुतालिक, संस्थापक-अध्यक्ष, 'श्रीराम सेना'. २८

अध्याय ३ : हिंदू राष्ट्रकी स्थापना

१. हिंदू राष्ट्रकी आवश्यकता ! – श्री सिद्धलिंग महास्वामीजी, श्रीराम सेना ३१
२. निधर्मी विचारधाराका राष्ट्र नहीं, धर्माधिष्ठित 'हिंदू राष्ट्र' ही चाहिए !
– डॉ. नील माधव दास, संस्थापक, 'तरुण हिंदू', झारखंड. ३३
३. 'हिंदू राष्ट्र बनाओ !', ऐसी घोषणा करें ! – पू. नारायण साई, देहली. ३६
४. हिंदू राष्ट्रकी स्थापनाका कार्य करनेवालोंके लिए व्यावहारिक सूचनाएं !
– श्री. सुरेंद्र बिष्ट, राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन, देहली. ३७
५. हिंदू राष्ट्र हेतु क्रियाशील विचार ! – कर्नल दर्शनकुमार कपूर, देहली. ४०
६. हिंदूवादी कार्यकर्ताओंकी सहायता कैसे करें ? – श्री. नटेशन, तमिलनाडु ४२
७. हिंदू राष्ट्रकी स्थापनाका कार्य अर्थात हिंदुत्वनिष्ठोंका निष्काम
कर्मयोग ! – श्री. अश्वनीकुमार च्रोंगू, 'पनून कश्मीर', जम्मू. ४३
८. हिंदू राष्ट्र-स्थापनाका प्रत्यक्ष कार्य आरंभ करें ! – श्री. प्रमोद मुतालिक ४९
९. 'हिंदू विश्व' होने हेतु प्रयत्न करें ! – श्री. सुबेशसिंह यादव, गुजरात. ५३

अध्याय ४ : प्रसारमाध्यम

१. राष्ट्रविरोधी एवं हिंदूद्रोही प्रसारमाध्यम ! – श्री. बी. हरन्, ज्येष्ठ पत्रकार ५८
२. हिंदू नियतकालिकोंका परस्पर समन्वय ! – पी. दैवमुथ्थू, 'हिंदू वॉईस' ६३

भूमिका

१० से १४ जून २०१२ की कालावधिमें रामनाथी, गोवामें 'हिंदू जनजागृति समिति'की ओरसे आयोजित प्रथम 'अखिल भारतीय हिंदू अधिवेशन', 'हिंदू राष्ट्रकी स्थापना' हेतु बढा प्रथम ऐतिहासिक पग था । इस अधिवेशनमें १७ राज्योंके प्रखर हिंदुत्वनिष्ठ संगठनोंके नेता, हिंदुत्वनिष्ठ पत्रिकाओंके संपादक, विचारक, अधिवक्ता तथा हिंदुत्वका समष्टि कार्य करनेवाले संत सहभागी हुए थे । इस अधिवेशनमें निरंतर पांच दिनोंतक विविध हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंने विविध राष्ट्रीय एवं धार्मिक समस्याओंका अभ्यासपूर्ण विवेचन किया । उनके भाषणोंद्वारा देवालयोंकी दुःस्थिति, गोवंशकी असुरक्षितता, 'लव जिहाद', धर्मांतरण, हिंदूविरोधी कानून, हिंदूविरोधी दंगे इत्यादि राष्ट्रव्यापी समस्याओंके संदर्भमें वैचारिक मार्गदर्शन हुआ । धर्मरक्षाके अभियानोंके संदर्भमें 'समान सूत्री कार्यक्रम' चलानेका निर्णय हिंदू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए आवश्यक धर्मक्रांतिके लिए पूरक सिद्ध हुआ । संक्षेपमें, इस ऐतिहासिक अधिवेशनमें प्रस्तुत हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके विचार हम तीन ग्रंथमालाके रूपमें प्रस्तुत कर रहे हैं । इस ग्रंथमालाके पहले भागमें धर्माभिमानी वक्ताओंके 'आंग्ल शिक्षाव्यवस्था एवं इतिहासका विकृतिकरण', 'संस्कृतिरक्षा', 'हिंदू राष्ट्रकी स्थापना' एवं 'प्रसारमाध्यम', इन विषयोंपर तेजस्वी विचार दे रहे हैं । इस ग्रंथमालामें दिए हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके भाषण संपादित स्वरूपमें हैं तथा हिंदुत्वके क्षेत्रमें कार्य करनेवाले प्रत्येकके लिए प्रेरणादायी होनेके साथ ही जन्महिंदुओंको कर्महिंदू बननेके लिए भी मार्गदर्शक हैं ।

'इस ग्रंथमें प्रस्तुत हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके भाषण पढकर राष्ट्र एवं धर्मके रक्षण हेतु हिंदू क्रियाशील बनें तथा 'हिंदू राष्ट्र-स्थापनाके ऐतिहासिक कार्यमें योगदान दें', यही ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना है !